अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

महादेवी वर्मा के साहित्य में वेदना और ममता की प्रधानता

डॉ शिवदयाल पटेल
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय बरपाली,
जिला – कोरबा (छत्तीसगढ़)

हिन्दी गद्य साहित्य में नारी विमर्श का प्रारम्भ छायावाद से माना जाता है। महादेवी वर्मा नारी जीवन की अनेक समस्याओं को उजागर किया है। महादेवी वर्मा ने अपने गद्य साहित्य में नारी की विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। इनका निबंध 'शृंखला की कड़ियाँ' नारी विम"ा का सार्थक उदाहरण है। उन्होने नारियों की दीन–हीन दशा पर जो कार्य किया है, उसकी कल्पना करना कठिन है। नारियों के हितों की र{ाा के लि, जीवन भर कार्य करती रहीं। क्योंकि वे खुद ही एक नारी थी इसलिए, उनकी समस्याओ भली भाँति जानती और समझती थी ं। नारियों की दशा को व्यक्त करती हुई लिखती है–''पुरुष के अन्धानुसरण ने स्त्री के व्यक्तित्व को अपना दर्पण बनाकर उसकी उपयोगिता तो सीमित कर ही दी, साथ ही समाज का भी अपू.र्ण बना दिया। पुरुष समाज का न्याय है, स्त्री दया(पुरुष प्रतिशोधमय क्रोध है स्त्री {करुणामय (पुरुष का कर्त्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति और पुरुष बल है, स्त्री हृदय की प्रेरणा।'' महादेवी वर्मा छायावाद की एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। छायावाद का युग उथल–पुथल का युग था। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी स्तरों पर विभ्रम, द्वंद्व, संघर्ष और आंदोलन इस युग की विशेषता थी। इस पृष्ठभूमि में, अन्य संवेदनशील कवियों के समान ही, महादेवी ने भी अपनी रचनाशीलता का उपयोग किया। यहाँ हमारा लक्ष्य छायावादी युग की सामाजिक–राजनीतिक पृष्ठभूमि की विशद व्याख्या करना नहीं है। किंतु, यहाँ हमें इस बात को ध्यान में रखकर अवश्य आगे बढ़ना है कि कवि अपने समय की वास्तविकता, यथार्थ से प्रभावित होकर अपनी रचनाओं में उसकी विशिष्ट प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति देता है और उसकी रचनाएँ ही उस युग–विशेष की मूल प्रवृत्ति को रूपायित करती हैं। लेकिन महादेवीजी अपनी काव्य रचनाओं में प्रायः अंतर्मुखी रही हैं। अपनी व्यथा, वेदना और रहस्य भावना को ही इन्होंने मुखरित किया है। उनकी कविता का मुख्य स्वर आध्यात्मिकता ही अधिक दिखायी देता है। यद्यपि उनका गद्य रचनाओं में उनका उदार और सामाजिक व्यक्तित्व काफी मुखर है। इस पेपर में हम उनकी कविता में वेदना के भाव की व्याख्या करेंगे।

हम उनकी व्यक्तिगत दुःखानुभूति की विवेचना करेंगे और उनकी वेदना को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों पर विमर्श करेंगे। महादेवी ने एक दिव्य सत्ता के दर्शन हर कहीं, हरेक उपादान

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

में किए हैं। उस अलौकिक प्रिय से मिलन की इच्छा ने उन्हें उद्वेलित किया। रहस्य के आवरण में ही इसकी अभिव्यक्ति हुई। यहाँ हम उनके काव्य में विद्यमान रहस्यानुभूति का अनुशीलन करेंगे। हम यह कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा का काव्य' प्रासाद इन चार स्तम्भों पर अवस्थित है दृ वेदनानुभूति, रहस्य–भावना, प्रणय भाव, और सौंदर्यानुभूति। यदि हम यह कहें कि महादेवी वर्मा के काव्य का मूल भाव प्रणय है तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनकी कविताओं में उदात्त प्रेम का व्यापक चित्रण मिलता है। अलौकिक प्रिय के प्रति प्रणय की भावना, नारी–सुलभ संकोच और व्यक्तिगत तथा आध्यात्मिक विरह की अनुभूति उनके प्रणय के विविध आयाम हैं।

संकेतक – वेदना ,परिवार ,ममता ,परिवार में नारी ,भावना ,गद्य

महादेवी वर्मा का परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को रात 8 बजे फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था। हेमरानी देवी बड़ी धर्म परायण, कर्मनिष्ठ, भावुक एवं शाकाहारी महिला थीं। महादेवी जी की शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारंभ हुईय साथ ही संस्कृत, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। महादेवी जी की भाषा अत्यंत उत्कृष्ट, समर्थ तथा सशक्त है। संस्कृतनिष्ठता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। इन्होंने संस्कृतप्रधान शुद्ध साहित्यिक भाषा को ही अपनाया है। इनकी रचनाओं में कहीं–कहीं पर अत्यंत सरल और व्यावहारिक भाषा के दर्शन होते हैं।

महादेवी वर्मा हिंदी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें 'आधुनिक मीरा' के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें 'हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती' भी कहा है। महादेवी जी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं, जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाज–सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन–जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं अपितु समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया।

शिक्षाकृ महादेवी जी की शिक्षा इंदौर में मिशन स्कूल से प्रारंभ हुई साथ ही संस्कृत, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह आने पर शिक्षा स्थगित कर दी गई। विवाहोपरांत महादेवी जी ने 1919 में क्रॉस्थवेट कॉलेज इलाहाबाद

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रांत भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरूआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कॉलेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतींद्द ''सुनो, ये कविता भी लिखती हैं।'' 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम०ए० पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह 'नीहार' तथा 'रश्मि' प्रकाशित हो चुके थे।

कृतित्वकृ महादेवी वर्मा की गणना हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवियों एवं गद्य–लेखकों में की जाती है। महादेवी जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

(अ) निबंध संग्रहकृ शृंखला की कड़ियाँ, साहित्यकार की आस्था, क्षणदा, अबला और सबला। इन रचनाओं में इनके विचारात्मक और साहित्यिक निबंध संगृहीत हैं।

(ब) संस्मरण और रेखाचित्रकृ स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, मेरा परिवार। इन संस्मरणों में इनके ममतामय हृदय के दर्शन होते हैं।

(स) आलोचनाकृ हिंदी का विवेचनात्मक गद्य

(द) काव्य रचनाएँकृ सांध्यगीत, नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा, दीपशिखा। इन काव्यों में पीड़ा एवं रहस्यवादी भावनाएँ व्यक्त हुई हैं।

भाषा–शैली

महादेवी वर्मा की कविताओं में कल्पना की प्रधानता है परंतु गद्य में इन्होंने यथार्थ के धरातल पर स्थित रहकर ही अपनी रचनाओं का सृजन किया है। महादेवी जी की भाषा अत्यंत उत्कृष्ट, समर्थ तथा सशक्त है। संस्कृतनिष्ठता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। इन्होंने संस्कृतप्रधान शुद्ध साहित्यिक भाषा को ही अपनाया है। इनकी रचनाओं में कहीं–कहीं पर अत्यंत सरल और व्यावहारिक भाषा के दर्शन होते हैं। मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है। लक्षणा और व्यंजना की प्रधानता इनकी भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता है। महादेवी जी की भाषा में चित्रों को अंकित करने तथा अर्थ को व्यक्त करने की अदभुत क्षमता है। महादेवी जी की गद्य शैली बिलकुल अलग है। ये यथार्थवादी गद्य लेखिका थीं। इनकी गद्य शैली में मार्मिकता, बौद्धिकता, भावुकता, काव्यात्मक सौष्ठव तथा व्यंग्यात्मकता विद्यमान हैद्

अ) चित्रोपम वर्णनात्मक शैलीकृ महादेवी जी चित्रोपम वर्णन करने में सिद्धहस्त हैं। वस्तु, व्यक्ति अथवा घटना का वर्णन करते समय इनकी लेखनी तूलिका बन जाती है, जिससे सजीव शब्दचित्र बनते चले जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में संकलित 'गिल्लू' रेखाचित्र महादेवी जी की कृति 'मेरा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

परिवार' से लिया गया है। इनके निबंधों और रेखाचित्रों में अधिकतर इसी शैली का प्रयोग हुआ है। महादेवी जी की मुख्य शैली भी यही है।

(ब) विवेचनात्मक शैलीकृ गंभीर और विचारप्रधान विषयों में महादेवी जी ने इस शैली का प्रयोग किया है। इसकी भाषा गंभीर और संस्कृतनिष्ठ है।

(स) भावात्मक शैली महादेवी जी भावुक ह्रदया होने के साथ–साथ भावमयी कवयित्री भी थीं। ह्रदय का आवेग जब रुक नहीं पाता, तब उनकी शैली भावात्मक हो जाती है।

(द) व्यंग्यात्मक शैली नारी जीवन की विषमताओं और उन्हें दुःखी देखकर उनकी कोमल लेखनी से तीक्ष्ण व्यंग्य निकलने लगते हैं। 'शृंखला की कड़ियाँ', निबंध में इस व्यंग्यात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

महादेवी की कविता में सौंदर्य के विविध रूपों का मनोहर चित्रण हुआ है। उनकी सौंदर्यानुभूति विलक्षण है। वह, छायावाद के अन्य कवियों के समान ही, सौंदर्य–भावना को अपने युग की एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में अंगीकार करती हैं। वह भी अपनी कविताओं में सौंदर्य के सूक्ष्म रूप को ही प्रतिष्ठित और चित्रित करती हैं। महादेवी वर्मा सौंदर्य को 'सत्य प्राप्ति का साधन ' मानती हैं और उनकी सौंदर्यानुभूति प्रकृति तथा मानव जीवन दोनों की ओर आकृष्ट होती है।

जहाँ वह प्रकृति के विभिन्न रूपों में विराट सौंदर्य के दर्शन करती हैं वहीं नारी के विविध रूपों का भी उन्होंने चित्रण किया है। छायावादी कवि चतुष्ठय में महादेवी वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। इकाई के आगामी अंशों में हम उनकी काव्य संवेदना की उपर्युक्त विशेषताओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

महादेवी की काव्य संवेदना

छायावादी काव्य एक नई संवेदनशीलता का काव्य था। इस युग के कवि विशिष्ट अर्थ में संवेदनशील थे। महादेवी वर्मा के संदर्भ में उनका व्यक्तित्व अपनी इंद्रधनुषी आभा लिए उनके काव्य–लोक में उपस्थित होता है। इस प्रसंग में उनका नारी होना उनके पक्ष में जाता है। उन्होंने काव्य रचना को अत्यंत गंभीरता से लिया है। उनकी जीवन–दृष्टि मानवीय गुणों से सम्पृक्त और संवेदनाओं से अनुप्राणित है। उसमें उदात्त और गौरवमय भाव मिलते हैं और समस्त प्राणि–जगत के प्रति उनकी करुणा उमड़ी पड़ती है। आगे के अंशों में हम इन बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे और महादेवी की कविताओं में उनका अवतरण भी देखेंगे।

छायावादी युग भारतीय नवजागरण का काल था, जहाँ सभी स्तरों पर मुक्ति के लिए संघर्ष सक्रिय था। नारी भी अपनी मुक्ति की खोज में रत थी। महादेवी में मुक्ति की उड़ान स्पष्ट, असीम और अनंत है। उनमें नारी के अभिमानी रूप की अभिव्यंजना हुई है। मुक्ति की आकांक्षा भाषा के स्तर पर भी प्रकट होती है और शिल्प के स्तर पर भी। छायावादी भाव–बोध के लिए गीत आदर्श

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

विधा बनकर आई। महादेवी ने अपने काव्य के लिए गीत विधा को ही चुना। वस्तुतः अपने गीत काव्य में महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना का सहज प्रत्यक्षीकरण हुआ है। अपने युग का अध्यात्म और भौतिकता का द्वंद्व उन्हें रहस्य का आवरण लेने को बाध्य करता है और वह अभिव्यक्ति के स्तर पर प्रायः प्रतीक का सहारा लेती हैं। महादेवी की रहस्य भावना पर हम आगे सविस्तार चर्चा करेंगे। जबकि उनकी प्रतीक योजना पर हम अलग इकाई में प्रकाश डालेंगे।

महादेवी की काव्य संवेदना की निर्मिति और विकास में उनके व्यक्तिगत एकाकीपन की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसकी वेदना विभिन्न आयामों में उनके काव्य में प्रकट हुई है। वेदना के विविध रूपों की उपस्थिति उनके काव्य जगत की विशिष्टता है। महादेवी की कविता में व्याप्त इस वेदना के विषय में हम इस इकाई में अलग से चर्चा करेंगे।

प्रणय एक जीवन–दृष्टि के रूप में महादेवी के रचना–लोक में विद्यमान रहा है। उनका प्रियतम से नाता अत्यंत गूढ़, अत्यंत अज्ञेय है। इसे समझने के लिए कभी–कभी तो आत्मा–परमात्मा के संबंध का सहारा लेना पड़ता है। जीवन को 'विरह का जलजात' मानने वाली महादेवी प्रणय के संयोग पक्ष का भी चित्रण करती है। प्रेम अपने समग्र रूप मे महादेवी की कविता में प्रधानता से विद्यमान है।

महादेवी ने अखिल ब्रह्मांड में सौंदर्य के दर्शन किए हैं और उसे अपने गीतों में प्रमुख स्थान दिया है। स्थूल में सूक्ष्म के दर्शन उनकी सौंदर्य–दृष्टि की विशिष्टता है। सौंदर्य की अभिव्यंजना उनके काव्य में विभिन्न रूपों में हुई है और आनंद की सृष्टि करने में वह सफल रही है। व्यथा–वेदना से आनंद की ओर यह प्रस्थान उनकी काव्य–यात्रा का सार है। सम्यक् वेदनानुभूति का प्रस्फुटन आनंद में होता है। महादेवी के सौंदर्य चित्रण में सूक्ष्मता है। वहाँ स्थूल सौंदर्य के लिए स्थान नहीं है। ऐसे में प्रकृति अपने समग्र सौंदर्य में उनके काव्य में उपस्थित होती है। यहाँ हम महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना के विभिन्न पक्षों का विवेचन प्रस्तुत करेंगे।

महादेवी की कविता में वेदना भाव

महादेवी वर्मा की कविता में दुःख और करुणा का भाव प्रधान है। वेदना के विभिन्न रूपों की उपस्थिति उनके काव्य की एक प्रमुख विशेषता है। वह यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करतीं कि वह 'नीर भरी दुःख की बदली' हैं। वस्तुतः समूचा छायावादी काव्य ही व्यक्तिवाद का प्रभाव लेकर चला और वहाँ आत्माभिव्यक्ति को सहज ही स्थान मिला। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 'हिंदी साहित्य की भूमिका में लिखते हैं दृ '1900–1920 ई. की खड़ी बोली की कविता में कवि के अपने राग–विराग की प्रधानता हो गई। विषय अपने आप में कैसा है यह मुख्य बात नहीं थी, बल्कि मुख्य बात यह रह गई थी कि विषयी (कवि) के चित्त के राग–विराग से अनुरंजित होने के बाद वह कैसा दिखता है। विषय इसमें गौण हो गया, विषयी प्रधान।'

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

जहाँ तक महादेवी वर्मा का प्रश्न है, उनकी वेदना के उद्गम के बारे में निश्चित तौर पर कुछ कहना संभव नहीं है। उनके एक गीत की पंक्ति है दृ 'शलभ मैं शापमय वर हूँ ६ किसी का दीप निष्ठुर हूँ।' उनके पूरे काव्य पटल पर इस तरह के असंख्य बिम्ब बिखरे पड़े हैं, जिनसे उनके अंतस में पलती अथाह पीड़ा का स्पष्ट संकेत मिलता है। एक विचित्र–सा सूनापन, एक विलक्षण एकाकीपन बार–बार उनकी कविताओं में उमड़ता दिखाई देता है। अल्पायु में ही विवाहित होने के बाद, उन्होंने स्वेच्छा से एकांत जीवन का चयन किया। डॉ.नगेन्द्र का मानना है कि उनके जीवन में जो एकाकीपन था वह किसी अभाव की देन था। पीड़ा का साम्राज्य ही उनके काव्य–संसार की सौगात है दृ 'साम्राज्य मुझे दे डाला । उस चितवन ने पीड़ा का।' विफल प्रेम का यह रुदन महादेवी के काव्य की अंतर्वस्तु है। यह पीड़ा ही कवयित्री का प्रारब्ध है दृ 'मेरी मदिरा मधुवाली ६ आकर सारी दुलका दी । हंस कर पीड़ा से भर दी ६ छोटी जीवन की प्याली।' महादेवी की वेदना अनुभूतिजन्य होने के कारण उनकी कविताओं में इसकी अभिव्यक्ति भी अत्यंत सहज ढंग से हुई है। उसमें कृत्रिमता कहीं दिखाई नहीं पड़ती। वह कितनी सहजता से कह देती हैं दृ 'रात सी नीरव व्यथा ६ तम सी अगम मेरी कहानी।' किंतु, यहाँ हमें यह तथ्य ध्यान में रखना होगा कि महादेवी के काव्य में अभिव्यंजित दुःख और वेदना जैसे भाव आरोपित बिल्कुल नहीं हैं, इनका वरण तो कवयित्री ने स्वयं किया है। उनका यह कथन इस वक्तव्य की पुष्टि करता है दृ 'हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहँचा सकें, किंतु हमारा एक बूंद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।' (यामा । अपनी बात) निष्ठुर दीप–सी तिल–तिल जलती कवयित्री अपने काव्य में इस व्यक्तिगत व्यथा को शब्द देने में संकोच नहीं करती।

किंतु, महादेवी की वेदना नितांत वैयक्तिक भी नहीं है। स्वयं उन्होंने अपने जीवन में दुःख और अभाव की बात से इंकार किया है। वस्तुतः उनके वेदना–भाव का प्रासाद दो आधार–भूमियों पर टिका हुआ है दृ आध्यात्मिक भावभूमि तथा मानवतावादी भावभूमिद्य दोनों आधारभूमियाँ परस्पर अन्योन्याश्रित हैं।' (डॉ. सुषमा पाल ६ छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि)। बौद्ध धर्म के अध्ययन और उसके प्रति उनके रुझान ने भी महादेवी के वेदना–भाव के लिए आध्यात्मिक भावभूमि तैयार की। महादेवी ने दुःख को आध्यात्मिक स्तर पर ही अपनाया। भारतीय संस्कारों में पगी महादेवी करुणा–भाव में आकंठ डूबी हुई हैं। वेदना की अधिकता उन्हें अध्यात्म का आवरण लेने को बाध्य करती है। किसी दार्शनिक की तरह वह कह उठती हैं दृ 'विजन वन में बिखरा कर राग, । ज्गा सोते प्राणों की प्यास, ६ ढालकर सौरभ में उन्माद नशीली फैलाकर विश्वास, ६ लुभाओ इसे न मुग्ध वसन्त! ६ विरागी है मेरा एकान्त!' और, 'मैं क्यों पूछु यह विरह निशा ६ कितनी बीती क्या शेष रही?' तथागत की महाकरुणा का प्रभाव इन पंक्तियों में देखा जा सकता है दृ 'अश्रुकण से डर सजाया त्याग हीरक हार, ६ भीख दुःख की माँगने जो फिर गया प्रति द्वार ६ शूल जिसने

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

फूल छू चन्दन किया सन्ताप, ६ सुनो जगाती है उसी सिद्धार्थ की पदचाप, ६ करुणा के दुलारे जाग!'

जब व्यक्ति वेदना के अनुभव से गुजर चुकता है और उसकी तीव्रता के दंश सह चुकता है तो वह पराई पीर को उसी धरातल पर खड़े होकर रामझ सकता है। यहीं से उसमें समग्र मानव जाति के दुःखों के प्रति सहानुभूति और करुणा के भाव जन्म लेते हैं। महादेवी के वेदना–भाव–प्रासाद की दूसरी आधारभूमि मानवतावादी भावभूमि है। मानव मात्र के प्रति करुणा का प्रत्यक्षीकरण महादेवी के गद्य लेखन में देखा जा सकता है। पद्य के क्षेत्र में, 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' तक आते–आते उनकी वेदना को मानव मात्र के प्रति करुणा का रूप लेते देखा जा सकता है। इस दृष्टि से 'दीपशिखा' महादेवी की अनुपम कृति है। इसी संग्रह की ये पंक्तियाँ देखिए, जहाँ कवयित्री की चिंता केवल मनुष्य नहीं, तन्वंगी पक्षियों के प्रति भी प्रकट होती है दृ 'पथ न भूले एक पग भी । घर न खोए लघु विहग भी । स्निग्ध लौं की तूलिका से । आँक सबकी छाँह उज्ज्वल।' महादेवी वर्मा व्यापक सृष्टि के पक्ष में अपने स्वयं के दुःख, अपनी वेदना को भी तिरोहित करने को तैयार रहती हैं।

एक कविता में वह कहती हैं दृ

'मेरे बंधन नहीं आज प्रिय,
संसृति की कड़ियाँ देखो
मेरे गीले पलक छुओ मत,
मुरझाई कलियाँ देखो।'

एक अन्य कविता में, सुमन के माध्यम से वह वंचितों, शोषितों की उपेक्षा से क्षुब्ध होकर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करती हैं दृ

'कर दिया मधुर और सौरभ ।
दान सारा एक दिन ।
किंतु रोता कौन है ।
तेरे लिए दानी सुमन?'

अब, एक और उदाहरण देखिए दृ

'कह दे माँ क्या देखें।
देखें खिलती कलियाँ या
प्यासे सूखे अधरों को
तेरी चिर–यौवन सुषमा
या जर्जर जीवन देखू।'

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

क्या अब भी हम कुछ आलोचकों की इस दलील का समर्थन कर सकते हैं कि महादेवी वर्मा के काव्य पटल पर मिलने वाले वेदना के रंग उनकी वैयक्तिक व्यथा की अभिव्यक्ति हैं? क्या उनपर पलायनवादी होने का आरोप लगाना औचित्यपूर्ण है? इन प्रश्नों के उत्तर में यहाँ हम डॉ.शोभानाथ यादव के इस कथन को उद्धृत करना चाहेंगे दृ 'आत्मवादी कवि या कलाकार अंतर्मुखी अवश्य होता है और इस रूप में महादेवी भी अधिक प्रबल हैं, किंतु उनके अंतर्मुखी चिंतन में जहाँ विरह–मिलन, तृप्तिअतृप्ति, आशा–निराशा की हल्की गहरी लहरियाँ मचलती रहती हैं, वहाँ जीवन के अनेक उदबोधन गीत भी फूट पड़े हैं, करुणा और मानवता की अनगिनत ध्वनियाँ भी मुखर हो उठी हैं।'

डॉ.रामविलास शर्मा के शब्दों में दृ '(महादेवी वर्मा) की करुणा व्यक्तिपरक अथवा आत्मगत ही नहीं है। वह बहिर्मुखी एवं समाजपरक भी है, जिसका प्रमाण उनकी अनेक गद्य रचनाएँ, बंगाल के दुर्भिक्ष से संबंधित काव्य संकलन की भूमिका आदि है।'

यह एक विलक्षण तथ्य है कि महादेवी के काव्य–लोक में, वेदना की परिणति आनंद में होती है। कवयित्री दुःख और पीड़ा के बोझ तले घुट–घुटकर सिसकती नहीं, अपितु निरंतर बढ़ते हुए आनंद भाव की ओर उन्मुख होती है। वह आनंद की ऐसी अवस्था में पहुँच जाती है, जहाँ 'नयन श्रवणमय श्रवण नयनमन' हो जाता है। वेदना की धारा प्रवाहित होकर अंततः आनंद के सागर में ही जा मिलती है। यहाँ तक कि मृत्यु को भी महादेवी वर्मा अंत अथवा दुःखद नहीं मानतीं। उनकी दृष्टि में तो दृ 'अमरता है जीवन का ह्रास ध्मृत्यु जीवन का चरम विकास।' मृत्यु तो नियति है जो आनंद के ही सौ द्वार खोल देती है दृ 'सृष्टि का है यह अमिट विधान द्य एक मिटने में सौ वरदान।' उनका जीवन–दर्शन मानवता के लिए दुःख और वेदना के काँटे छोड़ना नहीं जानता। वह तो एक नई आशा, अमल आनंद की ही सृष्टि करना चाहती हैं। वह तो 'सब बुझे दीपक जला' देना चाहती हैं। उनकी कामना है दृ 'दुःख से सुखमय सुख हो दुःखमय, ६ उपल बने पुलकित से निर्झर, ६ मरु हो जाए उर्वर गायक।' जैसा कि हम इस इकाई में पहले कह चुके हैं, व्यथा–वेदना से आनंद की ओर यह प्रस्थान महादेवी वर्मा की काव्य–यात्रा का सार है। अपने इस विचार–बिंदु के समर्थन में हम 'महादेवी अभिनंदन ग्रंथ' से दो अंश उद्धृत करेंगे दृ

- 'वे हमें अपने काव्य में स्वर्ग की देवी–सी जान पड़ती हैं, मानो परीक्षार्थ कुछ दिन भूतल पर निवास करने आई हों। अपने जीवन की उच्चता और आनंद का उन्हें पूर्ण आभास है और इस मृत्युलोक के जीवन में भी वही आनंद प्राप्त करती हैं।' (डॉ.भगीरथ मिश्र)य और
- जीवन के अवसान समीप होते हुए भी दीप जलने लगते हैं तो समस्त कण–कण दीपक और तृण–तृण वर्तिका बन जाते हैं और हर नए पल में एक नई ज्योति झिलमिलाने लगती है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)

कितना आशावादी और आनंदवादी दर्शन है जिसे अनेक बार दुःख और उदासीनता के रूप में लोगों ने देखने की भूल कर डाली है। ' (शक्ति त्रिवेदी)

निष्कर्ष

इस तरह हमने देखा कि महादेवी वर्मा में वेदना का व्यक्तिगत रूप मिलता है तो समष्टिगत रूप भी। उनके वेदना–भाव का महल आध्यात्मिक और मानवतावादी भावभूमियों पर खड़ा है। उनकी वेदना के बारे में कोई निश्चित एक राय नहीं है। किंतु यह तो हम कह ही सकते हैं कि यह सहज है कि इसका वरण कवयित्री ने स्वयं किया और अपनी कविता में इसे प्रमुख स्थान दिया। उनकी वेदना प्राणि–मात्र के प्रति करुणा का रूप धारण करती है और वह अपने काव्य में समस्त मानव समाज, इसके वंचित, शोषित वर्ग की, पक्षधरता करती हैं। उनके काव्य लोक में वेदना की परिणति आनंद में होती है, और वह अपनी कविताओं के माध्यम से दुःखी जनों में नई आशा, अमल आनंद का संचार करती हैं।यदि महादेवी के काव्य में व्याप्त वेदना भाव के लिए उनके एकाकीपन, उनके व्यक्तिगत जीवनानुभवों को दोषी ठहराया जाता है तो बैजनाथ प्रसाद (आलोचना पर छायावाद का प्रभाव) के इस कथन को रेखांकित करना समीचीन होगा कि, 'गत महायुद्ध के बाद भारत की राजनीतिक परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि निराशा का स्वर काव्य में प्राकृतिक रूप से उद्भूत हुआ। छायावादियों ने अगर उसका साथ दिया है तो इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वे जान–बूझकर अकर्मण्यता का प्रचार कर रहे थे, बल्कि चाहते हुए उनके ओठों पर हंसी नहीं आ रही थी।'

सन्दर्भ–ग्रंथ

1. महादेवी वर्मा, शृंखला की कड़ियाँ, लाेकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008
2. सं. रामजी पाण्डेय, महादेवी : प्रतिनिधि गद्य–रचनाएँ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 1983

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 5.789 Volume 6-Issue 03, (July-Sep 2018)
3. तामा`को किकुचि, महादेवी वर्मा की विश्वदृष्टि, परम`श्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 2009

3. डॉ. विमलेश तेवतिया, महादेवी वर्मा व्यक्तित्व आर कृतिव, अमर प्रकाशन, मथुरा, 2008
4. डॉ. रामकिशोर शर्मा, हिन्दी साहित्य का इतिहास, विद्या प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002